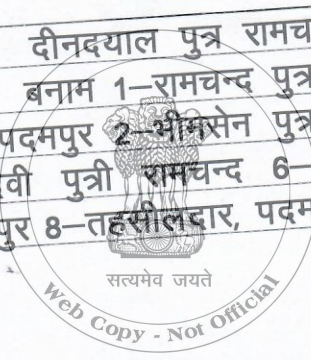


मुन्तकिली प्रकरण सं० 70/2017 अनवानी दीनदयाल पुत्र रामचन्द जाति  
कुम्हार निवासी हरखेवाला तहसील पदमपुर बनाम 1-रामचन्द पुत्र जेठाराम  
जाति कुम्हार निवासी हरखेवाला तहसील पदमपुर 2-भीमसेन पुत्र रामचन्द्र  
3-कौशल्यादेवी पुत्री रामचन्द 5-सुमित्रादेवी पुत्री रामचन्द 6-एसबीबीजे  
शाखा रिडमलसर 7-एसबीबीजे शाखा पदमपुर 8-तहसीलदार, पदमपुर



A3

18.09.2017

प्रार्थी के अभिभाषक श्री बलराम स्वामी उपस्थित है। उन्हे एडमिशन के बिन्दु पर उन्हें सुना गया एवं पत्रावली का अवलोकन किया गया।

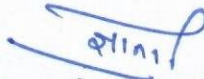
प्रार्थी के अभिभाषक श्री बलराम स्वामी का कथन है कि प्रार्थी ने अप्रार्थीयान के विरुद्ध उपखण्ड अधिकारी, पदमपुर के न्यायालय में एक वाद इस आशय का पेश किया गया है कि प्रार्थी के दादा जेठाराम के नाम चक 46एलएनपी के खाता सं० 19 मु०न० 30 23.10 बीघा में से 1/3 हिस्सा व खाता सं० 20 के मु०न० 2,9,14,80 के 51.10 बीघा में से 1/2 हिस्सा में 1/3 हिस्सा कुल 16.08 बीघा दर्ज थी प्रार्थी के दादा के देहांत के बाद अप्रार्थी सं० 1 को विरासतन में प्राप्त हुई जिसका ईन्तकाल सं० 15 दिनांक 12.04.54 दर्ज हुआ। इस प्रकार उपरोक्त भूमि जददी जायदाद होने से प्रार्थी का जन्म से इसमें हिस्सा है। इसके अलावा चक 45 एलएनपी में खाता संख्या 63/52 की 1.466 हे० तथा गांव फकीरवाली बरानी के खाता सं० 43/42 की 6.325 है० कय की गई। इस प्रकार तीनों चको की कुल 47.04 बीघा भूमि अप्रार्थी सं० 1 के नाम से चली आ रही है जिसमें प्रार्थी का 1/5 हिस्सा बनता है जिसका वाद प्रस्तुत किया हुआ है। पीठासीन अधिकारी का रवेया पक्षपातपूर्ण होने से उनके द्वारा दिनांक 28.07.17 को प्रार्थी का धारा 212 आरटीए का प्रा० पत्र खारिज करते समय स्पष्ट रूप से कहा गया है कि आपका दावा भी खारिज करने योग्य है। उनका आगे कथन है कि पीठासीन अधिकारी द्वारा दिनांक 28.07.17 का धारा 212 आरटीए का प्रा० पत्र चक 45 एलएनपी व फकीरवाली की हद तक खारिज करते समय ही राय जाहिर कर दी कि इन चको में प्रार्थी का कोई हिस्सा नहीं बनता है जबकि दावा साक्ष्य तलब होने से तनकीयात कायम कर साक्ष्य लेकर ही निर्णय किया जाना है जबकि दावा के निर्णय से पूर्व ही पीठासीन अधिकारी ने अपनी राय जाहिर कर दी है। इस प्रकार पीठासीन अधिकारी का रवेया स्पष्टतौर पर पक्षपातपूर्ण है। ऐसी स्थिति में उन्हें पीठासीन अधिकारी से न्याय मिलने की कोई उम्मीद नहीं है। चूंकि अप्रार्थी सं० 1 अप्रार्थी सं० 2 के प्रभाव में है। इसलिए मुन्तकिली प्रा० पत्र सुनवाई के लिए ग्रहण कर अधीनस्थ न्यायालय में लंबित वाद संख्या 11/2016 अनवानी दीनदयाल बनाम रामचन्द आदि धारा 88,188,92ए आरटीए को किसी अन्यत्र सक्षम न्यायालय में मुन्तकिल किया जावे।

श्रीगंगानगर  
जिला कलेक्टर

मैने प्रार्थी के अभिभाषक के उक्त तर्कों पर मनन किया एवं मुन्तकिली प्रा० पत्र एवं दस्तावेजात का अवलोकन किया तो पाया कि प्रार्थी द्वारा उपखण्ड अधिकारी, पदमपुर के न्यायालय में एक दावा सं० 11/2016 अनवानी दीनदयाल बनाम रामचन्द्र आदि धारा 88,188,92ए आरटीए का पेश किया हुआ है और इसके साथ ही एक विविध प्रा० पत्र सं० 10/2016 दीनदयाल बनाम रामचन्द्र धारा 212 आरटीए का प्रस्तुत किया गया है। उक्त धारा 212 आरटीए के प्रा० पत्र का पीठासीन अधिकारी द्वारा दिनांक 28.07.17 को निर्णय किया जा चुका है। वर्तमान उक्त वाद सं० 11/2016 ही लंबित है जिसे अन्यत्र मुन्तकिल करवाने के लिए यह प्रा० पत्र पेश किया गया है। प्रार्थी द्वारा उक्त वाद सं० 11/2016 की प्रस्तुत ऑर्डरशीट के अवलोकन से पाया गया कि उक्त वाद दिनांक 09.02.16 से लंबित है और वर्तमान में दिनांक 21.08.17 जबाब के लिए नियत थी जिससे स्पष्ट होता है कि अभी उक्त वाद बहस की स्टेज पर नहीं है और मुकदमा मुन्तकिली का कोई ठोस आधार भी नहीं बताया गया है, दूसरा जहां तक पीठासीन अधिकारी के द्वारा अन्य सम्पत्ति के संबंध में अपनी राय जाहिर करने का प्रश्न है इस संबंध में प्रार्थी के पास पीठासीन अधिकारी के द्वारा पारित निर्णय दिनांक 28.07.2017 के विरुद्ध सक्षम न्यायालय में अपील करने का अधिकार प्राप्त है। ऐसी अवस्था में प्रार्थी का मुन्तकिली प्रा० पत्र सुनवाई के लिए ग्रहण करने योग्य नहीं है।

अतः उपरोक्त विवेचन के आधार पर प्रार्थी का यह मुन्तकिली प्रा० पत्र एडमिशन की स्टेज पर खारिज किया जाता है। आदेश की प्रति उपखण्ड अधिकारी, पदमपुर को पालनार्थ भिजवाई जावे। पत्रावली बाद तरतीब तकमील दाखिल दफतर हो।

यह आदेश आज दिनांक 18.09.2017 को मेरे द्वारा लिखाया जाकर खुले न्यायालय में सुनाया गया।

  
( ज्ञाना राम )  
जिला कलेक्टर  
श्रीगंगानगर

1770  
29-9-17

AS  
2